अनुक्रम

भूमिका

अध्याय १ : देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व और कृतित्व १-११

अध्याय २ : देवेश ठाकुर के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय १२-३२

- भ्रमभंग
- प्रिय शबनम
- काँचघर
- इसीलिए
- अपना अपना आकाश
- जनगाथा
- गुरू-कुल

अध्याय ३ : महानगरीय समस्याएँ : स्वरूप विवेचन ३३-३७

- गांव का स्वरूप
- नगरीकरण और उसके कारण
  १) औद्योगिकरण
  २) यातायात और संचार के माध्यम
  ३) आर्थिक कारण
  ४) राजनीतिक कारण
  ५) सांस्कृतिक कारण
- ग्रामीण और महानगरीय जीवन में अंतर
- नगरों से महानगर और महानगरों से विशाल नगर तक ..
- महानगरों का आकर्षण
- नगरों का वर्गीकरण
- निष्कर्ष

अध्याय ४ : देवेश ठाकुर के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय समस्याएँ ३८-९६

१. महानगरों में अपने लोग, अपना गाँव, कस्बे का परिवेश और जीवन मूल्य छूटने का दर्द
२. महानगरों में मकान की समस्या और गंदी बस्तियों का चित्रण
३. महानगरों में यातायात की समस्या
४. महानगर में आर्थिक तंगी
५. महानगरों में अर्थकेन्द्रित रिश्तें
६. महानगरीय जीवन में होटल, क्लब, रेस्तराँ आदि
७. महानगरों में असुरक्षितता की समस्या
८. महानगरीय जीवन में छोटेपन का अहसास
९. महानगरों में अकेलेपन की समस्या
१०. महानगरीय जीवन में व्यक्ति की विक्षिप्त मनोदशा
११. महानगरों में विलासिता के बढ़ते चरण और सम्बन्धों की शिथिलता
१२. महानगरों में वेश्या-समस्या
१३. महानगरों में शिक्षा-क्षेत्र की समस्याएँ
१४. महानगरों में डॉक्टर और अस्पताल की समस्या

उपसंहार ९७-१००

संदर्भ ग्रंथ-सूचि १०१